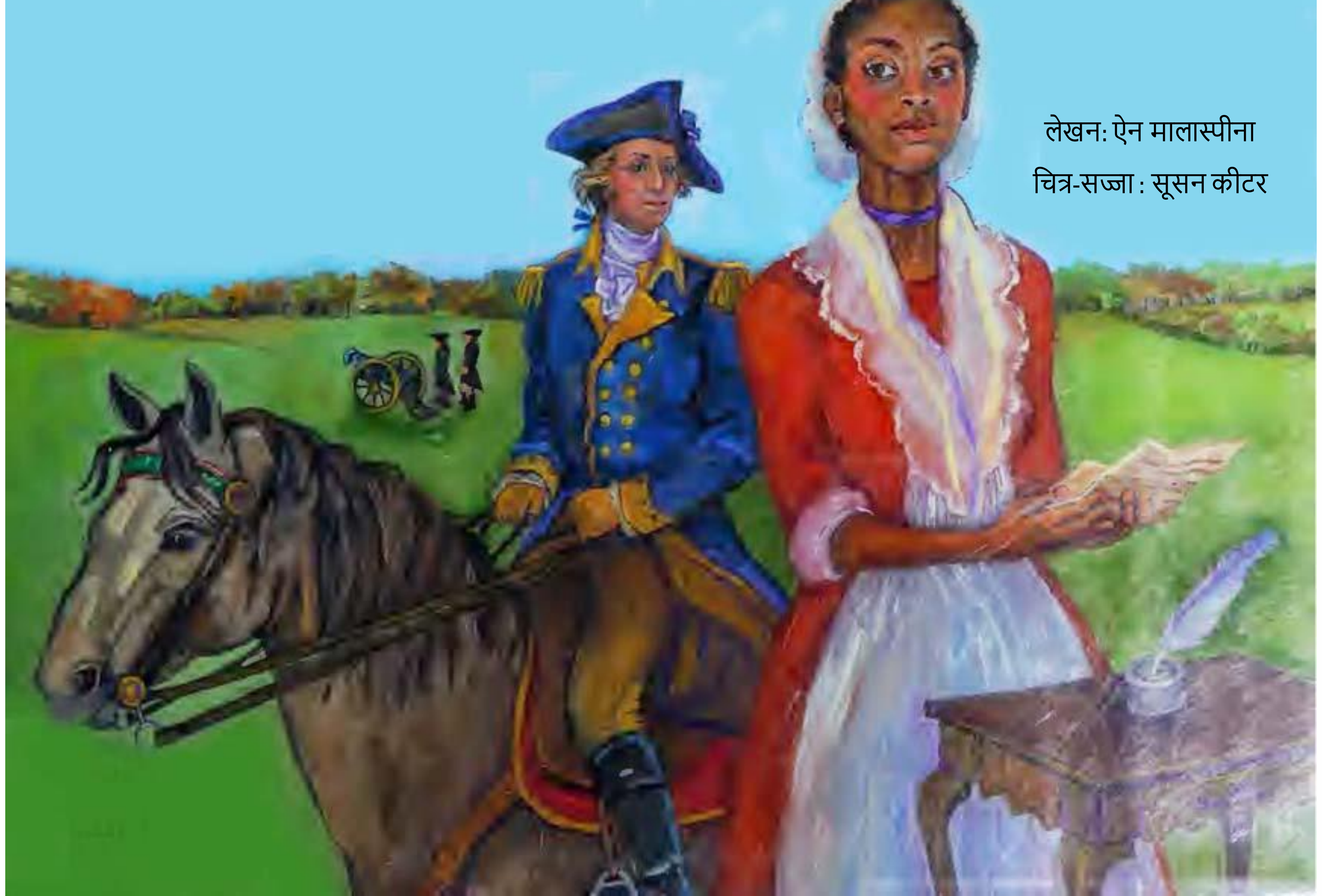
फिलिस का स्वातंत्र्य-गीत

जॉर्ज वाशिंगटन और फिलिस व्हीट्ली की कहानी



लेखन: ऐन मालास्पीना

चित्र-सज्जा : सूसन कीटर

१७७५ की शरद ऋतु के समय जॉर्ज वाशिंगटन अपनी जैसे-तैसे जुटाई आधी-अधूरी सेना का निरीक्षण कर रहे थे। ये अर्ध-प्रशिक्षित सैनिक भला शक्तिशाली ब्रिटिश सेना को कैसे पराजित कर पाएंगे, और क्या अमेरिका में आकर बसे लोगों को इंग्लैंड की गुलामी से मुक्त करा पाएंगे? फिलिस व्हीट्ली एक नौजवान नीग्रो कवियित्री थी, जिसने स्वयं भी गुलामी से आज़ाद होने का संघर्ष झेला था। उसने एक प्रेरक कविता लिख कर वाशिंगटन को प्रोत्साहित करने का निश्चय किया।

ऐन मालास्पीना की यह प्रेरणादायक कहानी इन दोनों निडर और साहसी किरदारों के जीवन-काल और परिस्थितियों का वर्णन करती है, जिन्होंने अमेरिका के स्वतंत्र देश बनने की नींव रखी। सूसन कीटर के बनाये सुन्दर तैल-चित्र इस कथा के दोनों पात्रों, एक योद्धा और दूसरी काव्यकार, को जीवंत कर देते हैं।

फिलिस का स्वातंत्र्य-गीत

जॉर्ज वाशिंगटन और फिलिस व्हीट्ली की कहानी

लेखन: ऐन मालास्पीना
चित्र-सज्जा : सूसन कीटर
हिंदी: योगेश



१७७५, शरद ऋतु

अपने घोड़े पर सवार जनरल जॉर्ज वाशिंगटन ने अपने सैनिकों पर एक निगाह दौड़ाई, जो कैंब्रिज, मैसाचुसेट्स के एक मैदान में एकत्र हुए थे।

इनमे से कुछ तो सैनिक बनने योग्य आयु के भी नहीं थे। और कुछ वृद्ध हो चुके थे। उनकी पोशाकें फटेहाल थीं, और उनकी बारूद की थैलियां खाली थीं।

युद्ध शुरू हो चुका था। क्या यह बदहाल सेना बर्तानवी साम्राज्य और इंग्लैंड के सम्राट के विरुद्ध विद्रोह छेड़ने में सक्षम थी?

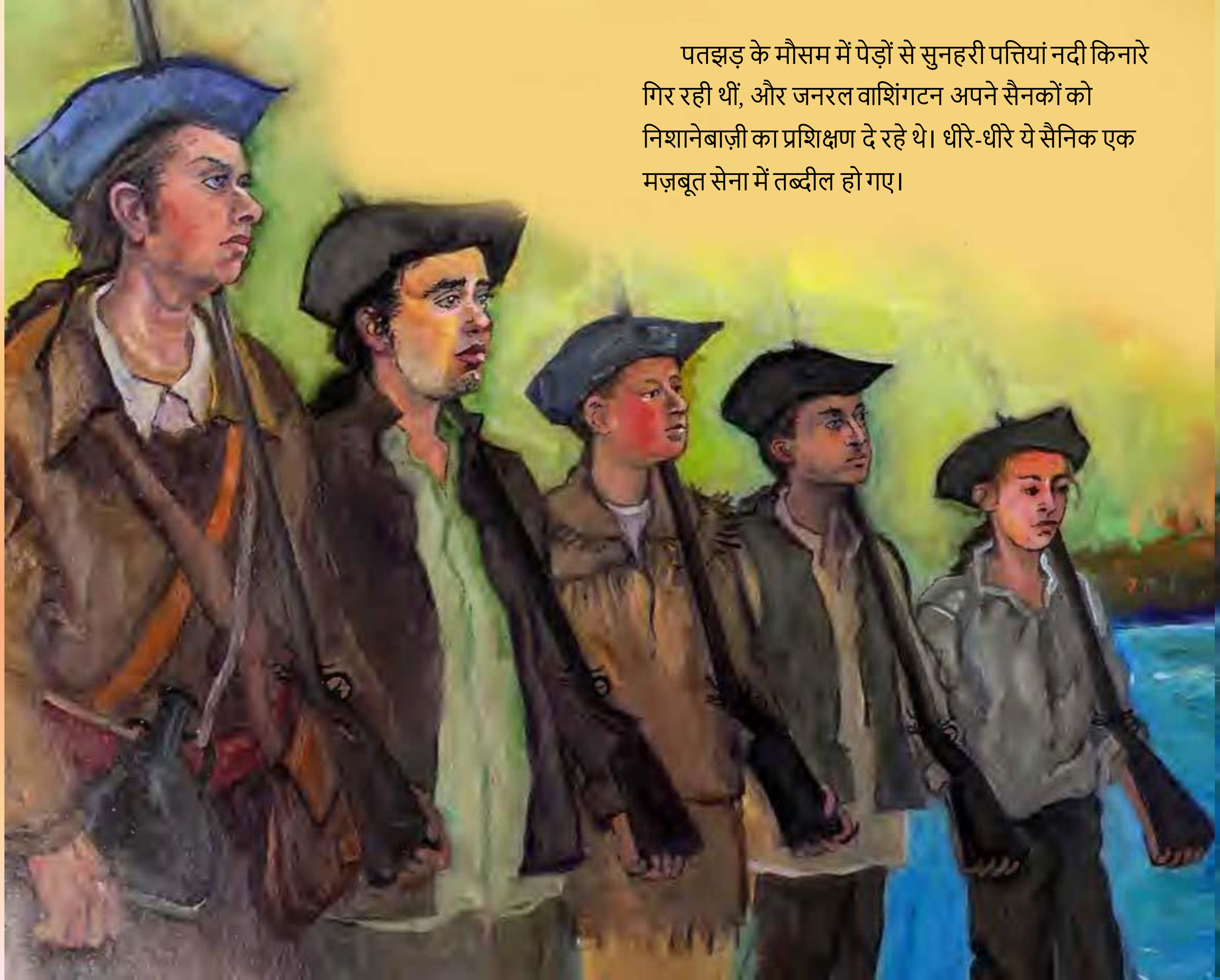




बॉस्टन में चार्ल्स नदी के दूसरी ओर ब्रिटेन की सेना फंसी हुई थी, और उसे जनरल वाशिंगटन के सैनिकों ने घेर रखा था। समुद्री मार्ग के अलावा बॉस्टन से निकल पाने का और कोई मार्ग उनके पास नहीं था।

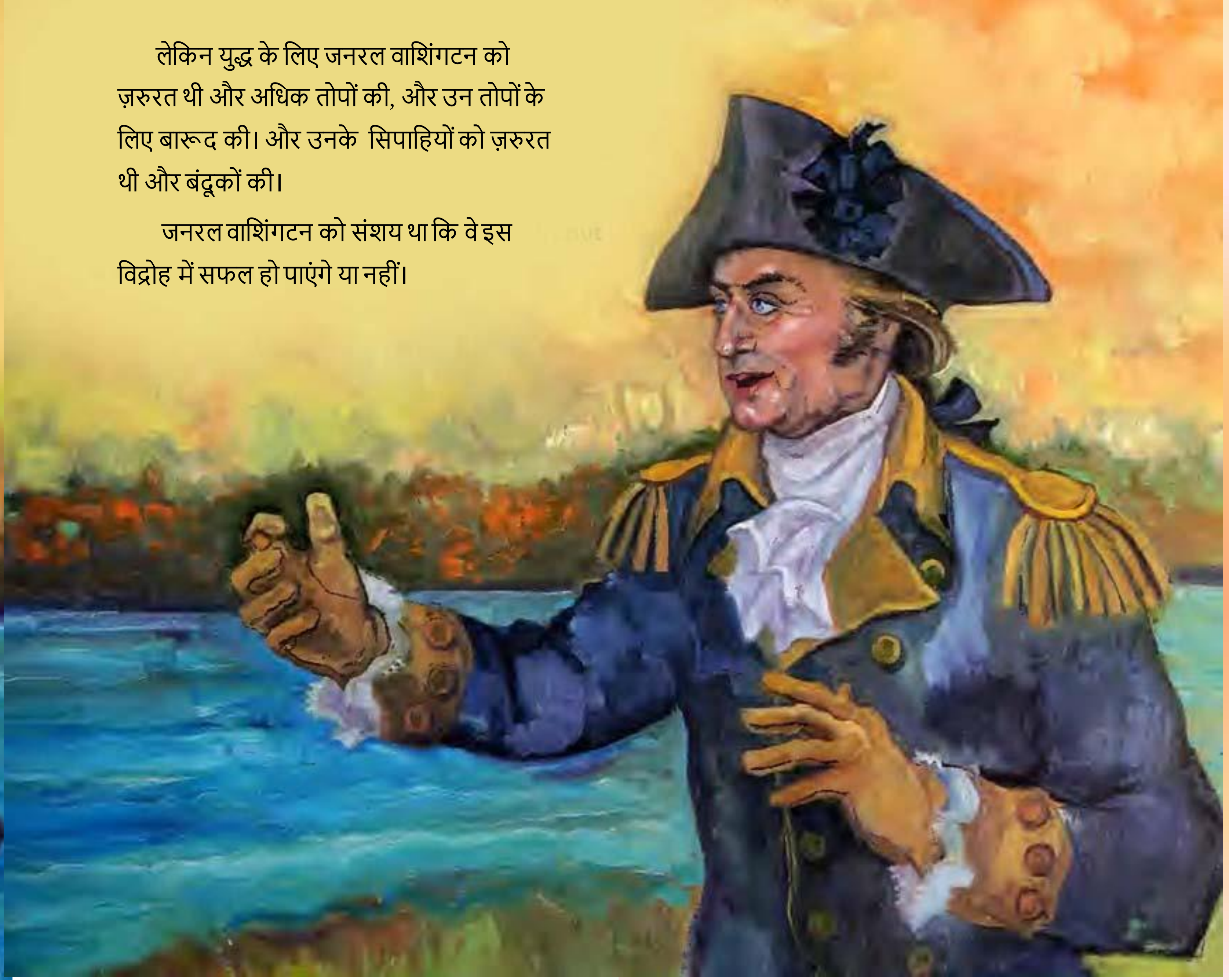
रोज़ाना उनके प्रशिक्षित सैनिक अपनी लाल वर्दी और चमकीले काले बूट पहने सड़कों पर मार्च करते थे। उन्होंने पहड़ियों पर किलेबंदी कर रखी थी, और वे जनरल वाशिंगटन के आक्रमण की प्रतीक्षा कर रहे थे। वे पूरी तरह तैयार थे।

पतझड़ के मौसम में पेड़ों से सुनहरी पत्तियां नदी किनारे गिर रही थीं, और जनरल वाशिंगटन अपने सैनकों को निशानेबाज़ी का प्रशिक्षण दे रहे थे। धीरे-धीरे ये सैनिक एक मज़बूत सेना में तब्दील हो गए।



लेकिन युद्ध के लिए जनरल वाशिंगटन को ज़रुरत थी और अधिक तोपों की, और उन तोपों के लिए बारूद की। और उनके सिपाहियों को ज़रुरत थी और बंदूकों की।

जनरल वाशिंगटन को संशय था कि वे इस विद्रोह में सफल हो पाएंगे या नहीं।





मीलों दूर, रोड-आइलैंड के प्रोविडेंस शहर में फिलिस व्हीट्ली अपने हाथ में कलम थामे, उसे स्याही की शीशी में डुबोने को थी। वह बॉस्टन शहर से भाग कर यहाँ आई थी, क्योंकि वहां ब्रिटेन के शासक जॉर्ज तृतीय ने हमला कर दिया था।

उसकी मेज़ पर रखी मोमबत्ती की लौ थरथरा रही थी, और साथ ही उसके मन में भी युद्ध सम्बन्धी विचारों का मंथन चल रहा था। बहुत से ब्रिटिश लोग उसके मित्र थे। उन सब ने उसे एक प्रसिद्ध कविताकार बनने में मदद की थी। बॉस्टन में उपनिवेशवादी एक तरफ तो स्वतंत्रता की बातें करते थे, लेकिन उनमें से कुछ अभी भी दास-दासियां रखे हुए थे।

लेकिन फिर भी उसका मन उपनिवेशवादियों की ओर झुक रहा था। अपनी एक कविता में फिलिस ने लिखा कि ब्रिटिश लोगों ने इस धरती को गुलाम बना रखा था। उपनिवेशवादी राजा को कर तो देते थे, लेकिन उन्हें उस संसद के लिए वोट देने का अधिकार नहीं था, जो इन करों का निर्धारण करती थी। अमेरिका को यह युद्ध जीतना ही होगा।

आखिर फिलिस को आज़ादी का इल्म था, और इसका भी कि ज़ंजीरों में बंध कर जीने का अनुभव कैसा होता है। अपनी आँखें मूँद कर वह अफ्रीका के बारे में सोचने लगी, जहाँ उसका जन्म हुआ था।







बचपन में उसने अपनी माँ को अपने छोटे से गांव में सूर्योदय के समय सूर्य की पूजा करते देखा था। उसके पास यही एक याददाश्त बची थे, गुलाम बनने से पहले की। कुछ लोग गुलामों को खरीदने के लिए पैसे लेकर आये थे। आखिर एक छोटी लड़की को खरीदने के लिए कितने पैसे की ज़रूरत थी? यक़ीनन, बहुत कम।

और फिर गुलामों से भरे हुए एक जहाज़ पर उसे भी लाद कर समुद्र पार भेज दिया गया।



ग्रीष्म ऋतू के एक दिन उसे बॉस्टन के बंदरगाह पर जहाज़ से उतारा गया। उसका बदन कुछ गंदे चीथड़ों से ढका था, और वह इंतज़ार कर रही थी, कि कब उसे एक चीनी की बोरी की तरह किसी और को बेच दिया जायेगा।

गुलामों की नीलामी में सबसे पहले हट्टे-कट्टे जवान बेचे गए। फिर शालीन वस्त्रों से सजी एक महिला ने पूछा, "इस छोटी लड़की की कीमत क्या है?"

"बहुत कम", गुलामों के सौदागर ने कहा।

और सौदागर को कीमत अदा करके महिला उस लड़की को अपने साथ ले गई।



किंग स्ट्रीट पर अपने बंगले में सुसाना व्हीट्ली और उसके पति जॉन ने उस नन्ही लड़की को भोजन और कपडे दिए। उनके दो जुड़वां बच्चे थे, नथेनिअल और मैरी, जिन्होंने कभी इतनी दुबली और कमज़ोर गुलाम लड़की नहीं देखी थी। तब वह इतनी छोटी थी, कि उसके सामने वाले दांत भी अभी नहीं निकले थे।

जल्दी ही व्हीट्ली दम्पति ने उस लड़की का नाम रख दिया - फिलिस, जोकि उसी जहाज़ का नाम था जिस पर सवार होकर वह गुलाम बनने आई थी।



धीरे धीरे सुसाना को फिलिस से स्नेह हो गया, और वह हमेशा उसे अपने समीप रखती। अपनी नन्ही "दासी" को वह हलके फुलके काम ही करने को देती थी, जैसे कमरे में धूल झाड़ना या मेज़ की सफाई करना। जब मेहमान आते, और फिलिस चाय लेकर आती, तो सुसाना उसे वहीं बैठा लेती, और फिलिस सबकी बातें बड़े ध्यान से सुनती।





एक दिन फिलिस अंग्रेजी के अक्षर दीवार पर लिखने लगी। हर कोई बड़ा हैरान हुआ। क्या एक दास भी शिक्षित हो सकता था?

मेरी ने फिलिस को पढ़ना सिखाया, अंग्रेजी ही नहीं, लैटिन भी। वह बाइबिल पढ़ती थी, और यूनानी पौराणिक कथाएं भी। वह इतिहास और भूगोल भी पढ़ती थी, और कविताएं भी, पंक्ति-दर-पंक्ति।

फिलिस को शब्दों से प्यार हो गया था। ज़ोरदार शब्द, जैसे "शक्तिशाली" और "गरजते", और चमकीले शब्द, जैसे "झिलमिलाना" या "उज्जवल"।

जल्दी ही वह कविता भी लिखने लगी।

फिलिस की कवितायेँ अनेक विषयों पर होती थीं, जैसे ईश्वर, सागर, तूफ़ान, अफ्रीका या आज़ादी।



लोगबाग उसकी कवितायेँ अख़बारों में पढ़ते थे, लेकिन उन्हें विश्वास नहीं होता था कि एक गुलाम लड़की इतनी उत्कृष्ट रचनाएं लिख सकती होगी। बोस्टन का कोई भी प्रकाशक उसकी कविताओं की पुस्तक प्रकाशित करने को तैयार नहीं था।



सन १७७२ में फिलिस की पेशी बोस्टन के अठारह सबसे उच्च पदों पर आसीन व्यक्तियों के सामने हुई। उनमे मैसाचुसेट्स उपनिवेश के गवर्नर तक शामिल थे। फिलिस को यह प्रमाण देना था कि वह वास्तव में कविता लिख सकती थी।

उसका दिल तेज़ी से धड़क रहा था, जब वह उनके प्रश्नों के उत्तर दे रही थी।

अंततः उन्हें स्वीकार करना ही पड़ा। "हम सब, जिनके नाम नीचे लिखे हैं, यह घोषणा करते हैं कि ये कविताएं फिलिस ने ही लिखी हैं", उन्होंने लिखा, और सबने अपने हस्ताक्षर किये।

अगले वर्ष उसकी पुस्तक, "धर्म, नैतिकता, व अन्य विषयों पर कवितायेँ" का प्रकाशन इंग्लैंड में हुआ।

और उसके बाद मिस्टर व्हीट्ली ने उसे आज़ाद कर दिया।



आज़ाद होने के बाद फिलिस अमेरिका में बसे लोगों के आज़ादी पाने के आंदोलन की मदद करना चाहती थी। लेकिन उसके पास तो केवल अपनी कलम ही थी। उसने सोचा, क्यों न मैं एक कविता लिखूं, एक कविता जॉर्ज वाशिंगटन के लिए। उसने अपनी कलम दवात में डुबोई, और तारीख लिखी, २६ अक्टूबर १७७५।



दिसंबर १७७५ में फिलिस का पत्र उसकी कविता के साथ जनरल वाशिंगटन तक पहुंचा। उन्होंने पहले ही इस प्रसिद्ध गुलाम कवयित्री के बारे में सुन रखा था।

जनरल वाशिंगटन ने अपना चश्मा पहना और पढ़ना शुरू किया। उन्हें लगा कि जैसे उसकी रचना स्वयं ही स्वयं को गा कर सुना रही हो।

आगे बढ़िये, महानायक, नैतिकता आपके साथ है।

आपके सभी कार्यों में आपको दैवी मार्गदर्शन प्राप्त है।

एक मुकुट, एक महल, और स्वर्णमंडित

सूर्य सिंहासन, हे वाशिंगटन, यह सब आपको प्राप्त हो।

जनरल वाशिंगटन अपना महिमा-गान पढ़ कर बहुत प्रसन्न हुए, हालाँकि वह शासक नहीं बल्कि एक महान सेनापति बनना चाहते थे। लेकिन उनकी सेना अभी इतनी शक्तिशाली नहीं थी कि ब्रिटिश सेना को हरा सके। फिलिस व्हीट्ली ने जो लिखा था, कहीं वह ग़लत तो नहीं साबित होगा?



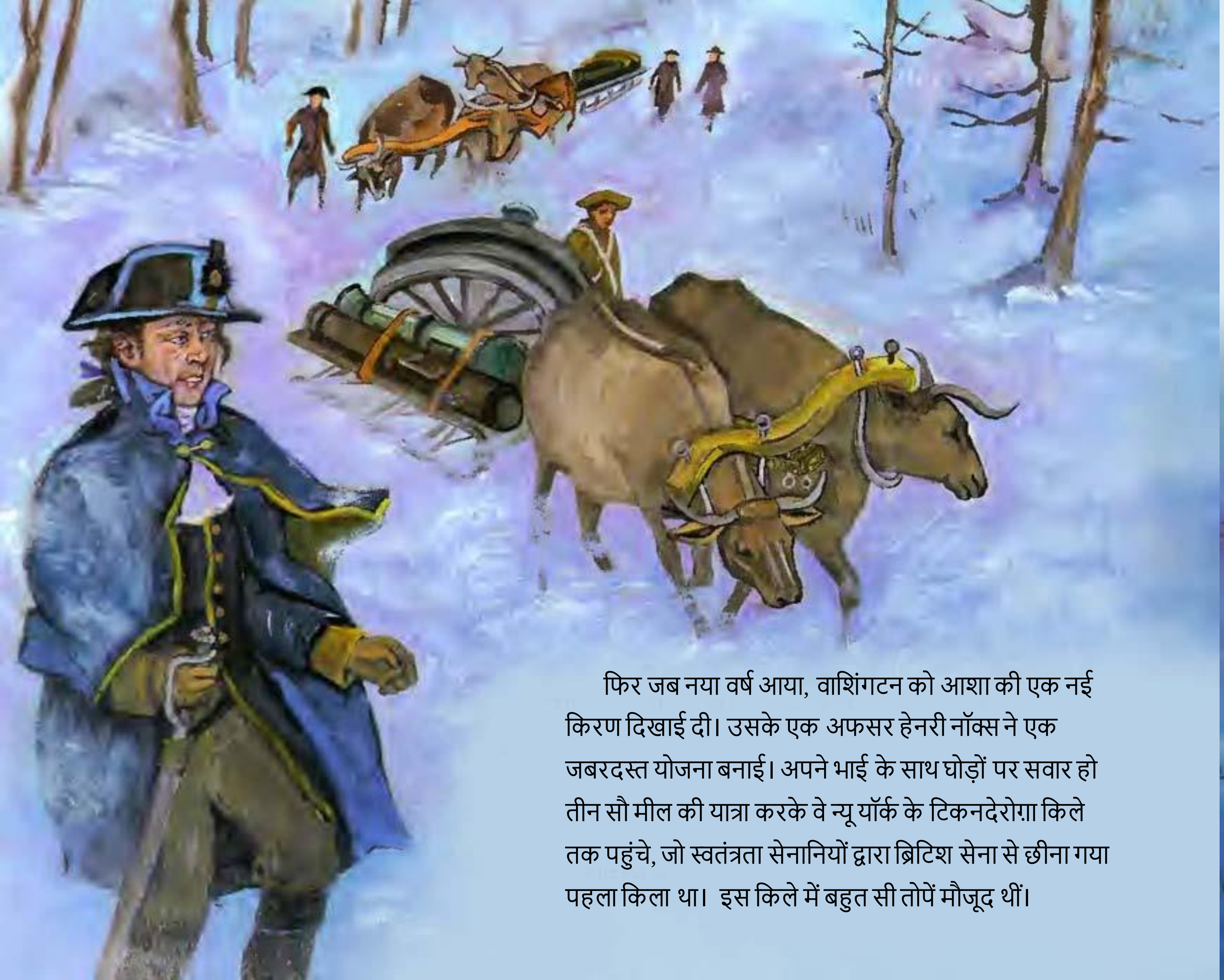




शिशिर-ऋतु की सर्द हवाएं चल रही थीं, और चार्ल्स नदी जम कर बर्फ बन चुकी थी। तेज़ ठंडी हवा सैनिकों की पोशाकों में घुसी जाती थी, और रात को उनकी झोपड़ियां और तम्बू बर्फ से लद जाते थे।

जनरल वाशिंगटन ने अपना एक जहाज़ी बेड़ा ब्रिटिश सेना के लिए रसद लाने वाले जहाज़ों को रोकने के लिए भेजा। लाल वर्दी वाली ब्रिटिश सेनाएं लकड़ी के घरों को तोड़ कर और पेड़ों को काट कर ईंधन जुटा रही थीं। वे भी वाशिंगटन के सैनिकों की भांति ही सर्दी और भूख से त्रस्त थे।

जब क्रिसमस का समय आया, वाशिंगटन की सेना के सैकड़ों सैनिक अचानक गायब हो गए। युद्ध के कठिन कार्य से थक कर वे अपने परिवारों के पास वापस चले गए, जिससे वाशिंगटन की सेना और भी कमज़ोर हो गई। वाशिंगटन की चिंताएं प्रतिदिन बढ़ती जा रही थीं।



फिर जब नया वर्ष आया, वाशिंगटन को आशा की एक नई किरण दिखाई दी। उसके एक अफसर हेनरी नॉक्स ने एक जबरदस्त योजना बनाई। अपने भाई के साथ घोड़ों पर सवार हो तीन सौ मील की यात्रा करके वे न्यू यॉर्क के टिकनदेरोगा किले तक पहुंचे, जो स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा ब्रिटिश सेना से छीना गया पहला किला था। इस किले में बहुत सी तोपें मौजूद थीं।

नॉक्स ने अपने भाई के साथ मिल कर वे तोपें नावों पर लादीं और लेक जॉर्ज को पार किया। फिर बर्फ से भरे जंगलों और जमी हुई हडसन नदी को पार करके वे वापस पहुंचे।

नव-वर्ष के दिन तक और सैनिक वाशिंगटन की सेना में आ पहुंचे थे। तीन हफ्ते बाद नॉक्स और उसके साथी अपनी सेना के लिए साठ टन तोपें व अन्य बंदूकें लेकर पहुंचे।







जनरल वाशिंगटन फिलिस व्हीट्ली की कविता भूले नहीं थे। फिलिस को विश्वास था कि वाशिंगटन एक महान जन-नायक थे।

फरवरी १७७६ में वाशिंगटन ने उसे एक पत्र लिखा।

"प्रिय फिलिस," जनरल ने लिखा, "मैं आपका हृदय से आभारी हूँ कि मेरे कार्य ने आपका ध्यान आकर्षित किया है, और इतने सुन्दर शब्दों में आपने इसे सराहा है।" और उन्होंने फिलिस की "उत्कृष्ट काव्य-प्रतिभा" की प्रशंसा की। उन्होंने उसे "अपूर्व प्रतिभाशाली" बताया, और उसे आकर मिलने का निमंत्रण भी दिया।

वसंत ऋतु प्रारम्भ होने को थी, और अंततः वाशिंगटन की सेना ब्रिटैन से लोहा लेने के लिए तैयार थी।

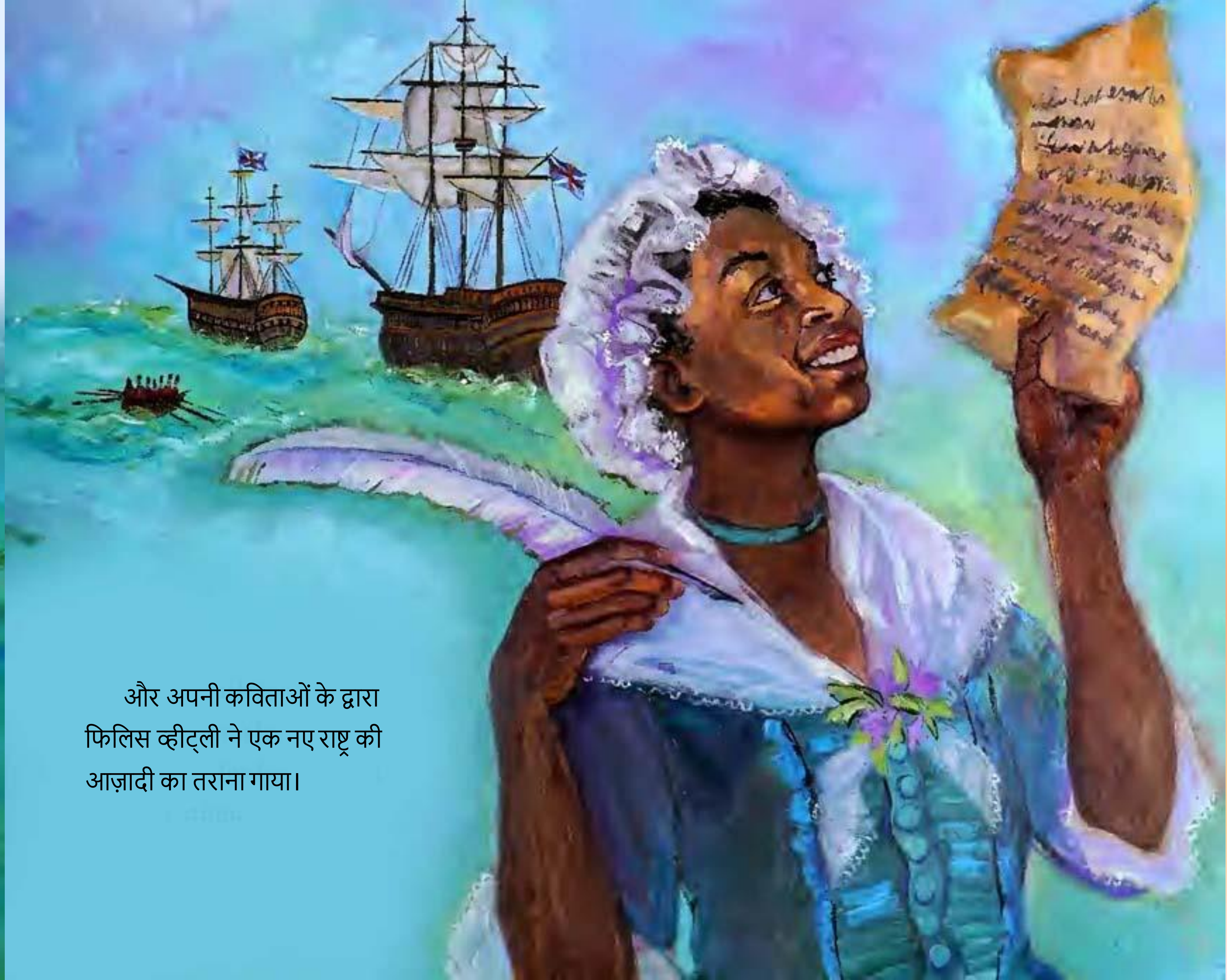
४ मार्च १७७६ की रात को वाशिंगटन के सैनिक तोपों को ठेल कर बोस्टन की पहाड़ियों के ऊपर ले गए और उनका निशाना नीचे नगर की ओर साध दिया। पेड़ के तनों पर चित्रकारी करके उन्होंने यह भ्रम पैदा किया कि उनके पास बहुत सी तोपें हैं। मिट्टी और पेड़ की टहनियों से उन्होंने रास्ते बंद कर दिए।

जब सूर्योदय हुआ, ब्रिटिश सेनाओं में देखा कि पहाड़ियों के ऊपर बहुत सी तोपें और सैनिक मौजूद थे। इतने सारे सैनिकों और हथियारों को देख कर ब्रिटिश सैनिक हतप्रभ रह गए। जनरल वाशिंगटन और उनकी विशाल सेना उनकी बंदूकों की पहुँच से परे थी।

कुछ दिन बाद ही ब्रिटिश सेना पीछे हटने लगी, और बोस्टन छोड़ कर अपनी नौकाओं में उत्तर की ओर प्रस्थान कर गई। बोस्टन पर अब अमेरिकन सेना का अधिकार था।

और इस तरह वाशिंगटन की सेना को उसकी पहली जीत हासिल हुई।





और अपनी कविताओं के द्वारा फिलिस व्हीट्ली ने एक नए राष्ट्र की आज़ादी का तराना गाया।

१७७६ में जॉर्ज वाशिंगटन ने एक पत्र लिख कर फिलिस व्हीट्ली को कैंब्रिज में अपने मुख्यालय में भेंट करने के लिए आमंत्रित किया था। यदि ऐसा होता तो यह बड़ा विस्मयकारी दृश्य होता - एक ओर एक विशाल सेना के लम्बे तगड़े नायक, और दूसरी ओर एक छोटी नन्ही गुलाम रह चुकी तरुणी, महज़ अपने हाथ में एक कलम थामे हुए। पता नहीं उनकी मुलाकात हुई भी या नहीं, और अगर हुई तो उन्होंने आपस में क्या बातें कीं। जल्द ही युद्ध की परिस्थितियों दोनों को विपरीत दिशाओं में ले गईं।

इस स्वतंत्रता संग्राम में आठ वर्षों के लम्बे समय तक जॉर्ज वाशिंगटन ने विद्रोही सेना का नेतृत्व किया। उन्हें बहुत से मोर्चों पर हार का सामना करना पड़ा, लेकिन कुछ में उन्हें जीत भी हासिल हुई। और उनकी जीती कुछ बाज़ियां बहुत महत्वपूर्ण थीं। अंततः अक्टूबर १७८१ में यॉर्कटाउन वर्जीनिया में उनकी सेना ने ब्रिटिश सेना को पराजित कर दिया। १७८३ में दोनों सेनाओं के बीच संधि पर हस्ताक्षर हुए, जिसमें अमेरिका की स्वतंत्रता को मान्यता दे दी गई। अब अमेरिकी उपनिवेश स्वतंत्र थे, और एक नए राष्ट्र ने जन्म ले लिया था। ३० अप्रैल, १७८९ को वाशिंगटन अमेरिका के पहले राष्ट्रपति बन गए।

इधर फिलिस व्हीट्ली को अपने स्वयं के जीवन में कई संघर्षों का सामना करना पड़ा। १७७३ में गुलामी से छुटकारा पाने के बाद उसे रोज़ी-रोटी जुटाने की आवश्यकता थी। उसने अपनी कविताओं से कुछ कमाने का प्रयत्न किया, लेकिन यह आसान नहीं था, क्योंकि युद्ध के उस काल में लोग अपना पैसा रोटी-कपडे के लिए बचा रहे थे। अत्यंत दरिद्रता के उन दिनों में उसने एक होटल में नौकरी की। फिर उसने जॉन पीटर्स नाम के व्यक्ति से विवाह किया, जो कि उसी की तरह गुलामी से मुक्त हो चुका था। लेकिन उसका व्यापार भी असफल हो गया। उनके दो बच्चे हुए, लेकिन दोनों की मृत्यु हो गई। युद्ध समाप्त होने के एक वर्ष बाद ही ५ दिसंबर १७८४ को व्हीट्ली की मृत्यु हो गई। उस समय वह केवल ३१ वर्ष की थी। उसने तभी एक शिशु को जन्म दिया था, जिसकी भी तुरंत मृत्यु हो गई, और माँ और बच्चे को एकसाथ ही दफना दिया गया।

अधिकांश गुलामों की तरह व्हीट्ली के जीवन का बहुत कम विवरण मिलता है। बहुत सी बातें निश्चय पूर्वक नहीं कही जा सकतीं। लेकिन उसकी कवितायेँ कभी नहीं भुलाई जा सकतीं। उसकी अंतिम कविताओं में से एक स्वतंत्रता संग्राम की समाप्ति के जश्न को समर्पित है। इसका शीर्षक था "स्वतंत्रता और शांति"।

अपनी वसीयत में वाशिंगटन ने लिखा था कि उनकी पत्नी मार्था की मृत्यु के बाद उनके सभी गुलामों को आज़ाद कर दिया जाए। १४ दिसंबर १७९९ को उनका देहांत हो गया।



१७७२ में बोस्टन में इस दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर किये गए थे।

" हम सभी हस्ताक्षर-कर्ता यह उद्घोषित करते हैं, कि आगे के पृष्ठों में लिखित कवितायेँ एक नीग्रो बालिका फिलिस के द्वारा ही लिखी गई हैं, जिसे कुछ ही वर्ष पूर्व अफ्रीका से लाया गया था, और जो तब पूर्णतः अशिक्षित थी। तब से वह इसी नगर में एक परिवार में गुलामी का जीवन जीती रही है। नगर के सर्वाधिक शिक्षित और संभ्रांत लोगों ने उसका परीक्षण किया है, और इस निर्णय पर पहुंचे हैं कि वह इन कविताओं को लिखने में पूर्णतः सक्षम है।"

अधिकांश लोगों के लिए इस बात पर विश्वास करना कठिन था कि एक गुलाम लड़की भी युद्ध और स्वतंत्रता के बारे में लिख सकती थी। लेकिन फिलिस व्हीट्ली एक प्रसिद्ध कवियित्री बन गई, जिसने जनरल जॉर्ज वाशिंगटन को प्रोत्साहित करने के लिए एक कविता की रचना की।

